

ऋग्वेद मंत्र ज्ञान

वैदिक मंत्र एवं उसकी व्याख्या

ॐ

"अग्ने॒ यज॑स्व ह॒विषा॑ यजी॑याञ्छु॒ष्टी..."

प्रस्तुति

ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउंडेशन

आचार्य कपिल यादव

सम्पर्क: 8756390767

अग्ने॒ यज॑स्व ह॒विषा॑ यजी॑याञ्छु॒ष्टी दे॒ष्णम॒भि
गृ॑णीहि॒ राधः॑ ।
त्वं ह्यसि॑ रयि॒पतीं॑ रयी॒णां त्वं शुक्र॑स्य॒ वच॑सो म॒नोतां॑
॥

ऋग्वेद 2/9/4

पदच्छेद एवं शब्दार्थ

अग्ने (Agne): हे अग्नि! (परमेश्वर/विद्वान्/अग्नि तत्त्व)

यजस्व (Yajasva): यज्ञ करो / देवताओं को सम्बद्ध करो।

हविषा (Havisha): हवि (अर्पण योग्य वस्तु) के द्वारा।

यजीयान् (Yajiiyan): सबसे उत्तम यज्ञक (यज्ञ करने वाला)।

श्रुष्टी (Shrushti): शीघ्रता से / शीघ्रकारी।

देष्णम् (Deshnam): दान देने योग्य / उपहार।

अभि गृणीहि (Abhi Grinihi): प्रशंसा करो / स्वीकार करो।

राधः (Radhah): धन / अन्न / सफलता।

त्वं (Tvam): तुम।

हि (Hi): निश्चित रूप से।

असि (Asi): हो।

रयिपति: (Rayipatih): धन के स्वामी।

रयीणाम् (Rayinam): बहुत से धनों के।

शुक्रस्य (Shukrasya): शुद्ध/दीप्त/तेजस्वी (वचन के)।

वचस: (Vachasah): वचन / स्तोत्र / वाणी के।

मनोता (Manota): मनन करने वाले / प्रज्ञापक / कर्ता।

आचार्यों की व्याख्या

१. आचार्य सायण का भाष्य (पारम्परिक/याज्ञिक)

सायण के अनुसार, यह मंत्र अग्नि देव की स्तुति है। अग्नि सबसे उत्तम यजमान हैं। यहाँ भक्त प्रार्थना करता है कि हे अग्नि! आप शीघ्रता से हमारे द्वारा दिए गए हवि को देवताओं तक पहुँचाएँ। सायण 'श्रुष्टी' का अर्थ 'शीघ्र' (क्षिप्र) लेते हैं। वे कहते हैं कि अग्नि देवताओं के सम्मुख हमारी प्रशंसा करें और हमें धन (राधः) प्रदान करने में सहायक हों। यहाँ अग्नि को धनों का स्वामी (रयिपति) और स्तुतियों का मनन करने वाला (मनोता) कहा गया है।

२. स्वामी दयानंद सरस्वती का भाष्य (आध्यात्मिक/व्यावहारिक)

महर्षि दयानंद अग्नि का अर्थ 'पावक' या 'विद्वान् पुरुष' भी करते हैं। उनके अनुसार, यह मंत्र उस व्यक्ति के लिए है जो ज्ञान और ऐश्वर्य का स्वामी बनना चाहता है।

यजीयान्: जो श्रेष्ठ कर्मों का अनुष्ठान करता है।

मनोता: जो शुद्ध वचनों को समझने और उनका प्रचार करने वाला है।

दयानंद जी के अनुसार, मनुष्य को अग्नि (ऊर्जा/ज्ञान) के माध्यम से अपनी योग्यताओं को सिद्ध करना चाहिए ताकि वह सांसारिक और आध्यात्मिक धन (रयीणाम्) का स्वामी बन सके।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Perspective)

इस मंत्र को यदि वैज्ञानिक या प्राकृतिक दृष्टिकोण से देखें, तो यह 'ऊर्जा के रूपांतरण' (Transformation of Energy) का मंत्र है:

अग्नि (ऊर्जा): अग्नि केवल भौतिक अग्नि नहीं, बल्कि ब्रह्मांड की मूलभूत ऊर्जा है। हवि (पदार्थ) को जब अग्नि (ऊर्जा) में डाला जाता है, तो वह रूपांतरित होकर सूक्ष्म तरंगों (ध्वनि और प्रकाश) में बदल जाती है।

रयिपति (संसाधन प्रबंधन): विज्ञान की दृष्टि से 'रयीणाम्' का अर्थ है - संसाधनों का एकत्रीकरण। जो अग्नि (ऊर्जा/तप) का सही उपयोग जानता है, वही संसाधनों (Wealth/Energy) का स्वामी बन सकता है।

मनोता (चेतना का जागरण): 'शुक्रस्य वचसः' का अर्थ है 'शुद्ध विचार' या 'स्पष्ट सूचना'। मंत्र कहता है कि जो ऊर्जा का सही प्रबंधन करता है, वही अपनी चेतना (मन) को उत्कृष्ट बनाता है। यह मस्तिष्क की उस कार्यक्षमता को दर्शाता है जहाँ विचार, ऊर्जा (अग्नि) के साथ मिलकर परिणाम (राधः) उत्पन्न करते हैं।

निष्कर्ष

यह मंत्र हमें सिखाता है कि जीवन में 'यज्ञ' (समर्पण/प्रयास) ही सफलता की कुंजी है। यदि हम अपनी ऊर्जा (अग्नि) का उपयोग सही दिशा में करते हैं, तो हम निश्चित रूप से ज्ञान और ऐश्वर्य (रयिपति) के स्वामी बन सकते हैं।

प्रस्तुति: ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउंडेशन

आचार्य: कपिल यादव | **सम्पर्क:** 8756390767